वेद एवं संहिता-साहित्य – एक सामान्य परिचय –

वेद भारतीय धर्म के सार हैं – वेदोऽखिलो धर्ममूलम् (मनुस्मृति-2।6). वैयाकरण वेद शब्द की व्याख्या करते हैं – विद्यते ज्ञायतेऽनेनेति वेदः – अर्थात् जिसके द्वारा कोई ज्ञान प्राप्त किया जाय, वही वेद है।

मीमांसकों ने कहा कि प्रत्यक्ष और अनुमान के द्वारा हम जिस ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकते हैं, वह वेद से प्राप्त है। इसके अतिरिक्त ज्ञान को कोई अन्य साधन इस जगत में नहीं है –

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता॥

गुरुपरम्परा (गुरु-शिष्य के बीच) से सुरक्षित होने के कारण इसे 'श्रुति' भी कहा जाता है। भारतवर्ष में यह प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रकट हुई एवं बाद में याज्ञिक उपयोग के लिए इसे संहिताबद्ध किया गया। ऋग्, यजु, साम एवं अथर्व इन चारों वेदों के मंत्र और ब्राह्मण दो भाग हुए – 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'

ब्राह्मण काल में वेद के स्वाध्याय पर जोर दिया गया एवं उनके अविकल उच्चारण तथा अर्थज्ञान को अनिवार्य धर्म के रूप में स्वीकार किया गया – 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च' (महाभाष्य प्रथम आह्निक)। भारतीय जीवन दर्शन की संबंध किसी न किसी रूप में वैदिक संस्कृति से जुड़ा है। आर्यों का यज्ञों में विश्वास, विविध पदार्थों में देवबुद्धि, भौतिकवाद में अनास्था, पुनर्जन्म में विश्वास, मोक्ष के प्रति पूर्ण-आस्था आदि का स्त्रोत वेदों में ही है। वेदों का भाषा-शास्त्रीय महत्त्व भी है। इसी कारण पाश्चात्य विद्वानों की भी वेदों के प्रति आकर्षण है।

वैदिक मंत्रों का संग्रह संहिता कहलाता है। इसलिए पाणिनि ने 'परः संनिकर्षः संहिता' (अष्टाध्यायी) अर्थ किया है।

Scanned with CamScanner

सामान्य वैदिक मन्त्र को करानेवाले पुरोहित ऋत्विक् कहलाते थे —
ऋतौ याजयति इति ऋत्विक्। इनकी संख्या चार भागों में विभक्त थी — होता, उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा।

(a) होता - यज्ञों में देवताओं का आवाहन करते थे। होता के उपयोग के लिए उपलब्ध समस्त ऋचाओं को संकलन करके 'ऋग्वेद संहिता' बनी।

(b) उद्गाता — का काम यज्ञों में संगीतात्मक ऋचाओं का विशेष प्रकार से गायन होता था, देवताओं को प्रसन्नता के लिए उत्कृष्ट ऋचाओं का संकलन करके 'सामवेद संहिता' बनी।

(c) अध्वर्यु — अध्वर अर्थात् यज्ञ — अध्वरं युनक्ति इत्यध्वर्युः, अध्वरं कामयते वा। यह यज्ञ के ~~प्रारम्भ~~ प्रारम्भ से समाप्ति तक पूरे कार्यभार का संचालन करते थे। उस काल में यज्ञ संचालन के लिए उपयोगी मंत्रों को 'यजुस' कहा जाता था इसलिए इनकी संहिता 'यजुर्वेद संहिता' कहलायी। ऋत्विक् का कार्य इनके कार्य-संचालन से ही शुरू होता था।

(d) ब्रह्मा — ब्रह्मा सर्वविद् होते थे उन्हें तीनों अन्य वेदों का पूरा ज्ञान होता था, जिसके आधार पर शंकाओं का समाधान, संकर निवारण, अशुद्धियों का संशोधन आदि कार्य करते थे। इनसे सम्बद्ध मंत्रों का संकलन ही अथर्व संहिता कहलाया।

कालान्तर में संहिताओं की अनेक शाखाएँ बनती गयीं, जिनमें से कुछ सुरक्षित हैं, कुछ विलुप्त हुईं। वैदिक शाखाओं की अधिकतम संख्याओं का निर्देश महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य के प्रथम आह्निक में किया है —
"चत्वारो वेदाः साङ्गाः सरहस्या बहुधा भिन्नाः, एकशतमध्वर्यु-शाखाः, सहस्रवर्त्मा सामवेदः, एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्, नवधाथर्वणो वेदः।"

B.A. III Hons. Sanskrit